Shiv Chhatrapati Shikshan Sanstha's
Rajarshi Shahu Mahavidyalaya (Autonomous), Latur

Research Advisory Committe & Intellectual Property Cell

National Education Policy : Exploration and Perspectives

: Edited By :
Dr. Mahadev Gavhane
Chief Editor
Dr. Suresh Phule
Editor
Dr. Kundan Tayade
Co-Editor

: Editorial Board :
Prof. Sadashiv Shinde (Vice-Principal)
Dr. Omprakash Shahapurkar (CoE)
Dr. Anuja Jadhav (HoD, English)
Dr. Sambhaji Patil (HoD, Marathi)
Dr. Pushpalata Trimukhe (HoD, Commerce)
Dr. Abhijit Yadav (IQAC, Coordinator)

National Education Policy : Exploration and Perspectives

Edited By : Dr. Mahadev Gavhane (Chief Editor)
Dr. Suresh Phule (Editor)
Dr. Kundan Tayade (Co-Editor)

ISBN 978-93-84572-64-8

Pravartan Publication
Sant Dyaneshwar Nagar,
LIC Colony, Latur

Copyright © Authors 2023

First Editon : 8 March 2023

Offset : Pavan Offset, Latur

Front Page Design : Viru Gulve

Price : Rs. 200/-

Note : All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, distributed or transmitted in any form or by any means, including photocopying, recording, or other electronic or mechanical methods, without the written permission of the publisher and theAuthor.

INDEX

1. Analysis of New Education Policy: 2020 05
Prof. Vinod D. Late
2. Curriculum Design and Development: A Vital component of the NEP's Achievement 11
Renuka Ramakant Londhe
3. National Education Policy 2020 : Advantages And Disadvantages For Students 19
D. V. Raje
4. National Education Policy 2020 and challenges before Higher Education 22
Dr. Prakash Ratanlal Rodiya,
Dr. Suresh J. Phule
5. NEP 2020: Impact and issues 31
Aman K. Shaikh
V. D. Panchal
6. Overview of Nep 2020 37
Dr. Prakash Ratanlal Rodiya
7. National Education Policy 2020: Skill Development and Vocational Education 42
Mr. Krishnkant Bhujang Walasange
8. New Education Policy 2020: A Comparison with 1986 Policy 47
Miss. Aakanksha Kashinath Balsaraf
9. National Education Policy overview and principles 55
Prof. Sampada Suresh Kale
10. New Education Policy and its Impact areas 61
Miss Jaya M. Nahata
11. Higher Education in NEP 2020 69
Dr. Sachin Bhandare

12. Challenges and Opportunities of New Education Policy 2020 75
Miss Juveriya Mahmood Shaikh
13. NEP 2020 for making "India hub of Global Knowledge with Superpower" 83
Laturiya Pooja S.
14. NEP 2020: Empowerment of Teachers Skill 92
K. B. Shinde
15. Exploration of Various Dimensions of New Education Policy (NEP): 2020 95
K. S. Raut, D. V. Raje, Kundan C. Tayade
16. Critical Analysis and a Glimpse of New Education Policy 100
Miss. Amruta Dinkar Savalsure
17. New Education Policy-2022:Rational for Employability Opportunities 107
Maroti Sayabu Sudewad
Kundan Chandramani Tayade
18. New Education Policy 2020- The Reform of the Regulatory System in Higher Education 112
N. S. Pimple
१९. नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (२०२०) में भारतीय भाषाओं की महत्ता 115
प्रा. सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण
२०. राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० के दृष्टि में भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) और संस्कृत ज्ञान प्रणाली (SKS) 123
सहाय्यक. प्रा.– विनय व्यंकट गायकवाड
२१. नवीन शैक्षणिक धोरण–२०२० व तंत्रज्ञान संस्था 129
डॉ. वितेश निकते, प्रा. ज्ञानेश्वर बनसोडे
२२. २०२० आभासी कि वास्तव 135
श्री नरसिंग जयसिंग शिंदे
डॉ.ओमप्रकाश व्ही.शहापूरकर

❐❐❐

1.
Analysis of New Education Policy: 2020

Prof. Vinod D. Late,
Assistant Professor,
Department of Commerce
Rajarshi Shahu Mahavidyalaya
(Autonomous), Latur

Abstract:

The National Education Policy 2020 looks into the education system rooted in Indian ethos that contributes directly to transforming India that is Bharat. It was a long wait of 34 years for the country to see a New Education Policy 2020.On the 29th of July India saw the light of New Education Policy 2020 which received the approval of the Modi 2.0 government. In this new policy, there will be a 5+3+3+4 structure which comprises 12 years of school and 3 years of Anganwadi/ pre-school replacing old 10+2 structure. The NEP 2020 government is looking forward to making India a "global knowledge superpower" and it will be only done by making education system for schools and colleges more flexible, holistic, and multi-disciplinary which will bring out their unique capabilities.

Introduction:

The Government of India introduced the National Educational Policy (NEP) in 2020. The policy aims to achieve the set goals phase-wise with spirit and intent by the prioritization of action points in a comprehensive manner that entails careful planning, monitoring and collaborative implementation, timely infusion of requisite funds and careful analyses and reviewing at multiple implementation steps. Creation of a National Research Fund, incorporation of a new Higher Education Commission of India and investments of an amount equivalent to 6% of the

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. राजेश जोशी : प्रतिनिधि कविताएँ – राजेश जोशी, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली– ०२, पहला संस्करण २०१३, पृष्ठ १३६
२. राजभाषा हिंदी : समस्याएँ एवं समाधान – शशि नारायण, समाधान क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली– १५ प्रथम संस्करण २००४, पृष्ठ ९३
३. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (२०२०), मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, पृष्ठ ०५
४. वही, पृष्ठ ०७
५. वही, अनुच्छेद ४.११, पृष्ठ १९
६. वही
७. वही, अनुच्छेद ४.१३, पृष्ठ २०
८. वही, अनुच्छेद ४.२०, पृष्ठ २२
९. वही, अनुच्छेद १४.४.२ (छ), पृष्ठ ६७
१०. वही, अनुच्छेद २२.१०, पृष्ठ ८९
११. वही, अनुच्छेद २२.१४, पृष्ठ ८९–९०
१२. वही, अनुच्छेद २२.१८, पृष्ठ ९१
१३. वही, अनुच्छेद २२.१५, पृष्ठ ९०
१४. नवजागरण कवियों की पहचान हेमंत कुकरेती, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली–०२, प्रथम संस्करण २०१७, पृष्ठ २५
१५. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (२०२०), मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, अनुच्छेद २२.१७, पृष्ठ ९१
१६. वही, अनुच्छेद २२.१९, पृष्ठ ९१
१७. पचास कविताएँ उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली ०२, प्रथम संस्करण २०१२, पृष्ठ १२०

❐❐❐

२०.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० के दृष्टि में भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) और संस्कृत ज्ञान प्रणाली (SKS)

सहाय्यक. प्रा.– विनय व्यंकट गायकवाड
संस्कृत विभाग
राजर्षि–शाहू–महाविद्यालय, (स्वायत्त) लातूर
ईमेल– vinayshrutg@gmail.com
संपर्क नं. ९५६१४०३९७१/८७८८६५१३८३.

१. प्रस्तावना :–

''विना प्रयोजनमनुद्दिश्य मन्दोऽपि न प्रवर्तते'' इस संदर्भ से यह ज्ञात होता है की आज जो कुछ भी प्रचलित है या आज तक जो कुछ भी हुआ है उसमें निश्चित रूप से कुछ ना कुछ प्रयोजन है और रहेगा। इसी वैचारिक परंपरा को आत्मसात करते हुए प्राचीन ज्ञान पद्धति अथवा शिक्षा पद्धति का या आधुनिक शिक्षा पद्धत्ति का निर्माण हुआ है। प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा अद्वितीय ज्ञान और प्रज्ञा का प्रतीक है जिसमें ज्ञान –विज्ञान, लौकिक – पारलौकिक, कर्म – धर्म तथा भोग और त्याग का अद्भूत समन्वय रहा है। प्राचीन शिक्षा प्रणाली जीवन के नैतिक, भौतिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक मूल्यों पर केंद्रित होकर विनम्रता, सत्यता, अनुशासन, आत्मनिर्भरता सभी के प्रति सद्भावना जैसे मूल्यों पर जोर देती थी।

आधुनिक राष्ट्रीय शिक्षण प्रणाली २०२० में भी इन विषयों का विचार ध्यानपूर्वक किया है। समय के परिवर्तन को देखकर आवश्यक ऐसीव्यावसायिक शिक्षा, प्रौद्योगिकी की उपयुक्तता आदि विषयों पर जोर दिया है । इसी राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली २०२० के संदर्भ में प्राचीन भारतीय विद्याओं का किस प्रकार प्रयोग कर सकते है तथा हमारे प्राचीन ज्ञान को मुख्य प्रवाह में लाने के लिए क्या विचार हो सकता है? इसका विचार करके राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० में भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) काप्रावधान

किया है। IKS (भारतीय ज्ञान प्रणाली) की परिसंकल्पना को छोडकर भी NEP में संस्कृत ज्ञान प्रणाली के बारे में क्या प्रावधान है इसके बारे में भी यहाँ पर विचार किया है। इन दोनों विषयों में भिन्नताहै इसी कारण इससे समझना आवश्यक है।

२. राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२०

शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त करने, एक न्यायसंगत और न्यायपूर्ण समाज के विकास और राष्ट्रीय विकास को बढावा देने के लिए मूलभूत आवश्यकता है। शिक्षा से ही देश की समृद्ध प्रतिभा और संसाधनों का सर्वोत्तम विकास होता है। शिक्षा से व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व मेंविकासकीय सुदृढता होती है। ऐसे अनेकों विचारों को ध्यान में रखकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० का निर्माण किया गया है परंतु किसी भी नीति की प्रभावशीलता उसके कार्यान्वयन पर निर्भर करती है। अतः इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति का कार्यान्वयन प्रभावशीलता से होना अत्यन्त आवश्यक है। इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भाषायी विविधता का संरक्षण, शारीरिक शिक्षा पर बल, पाठ्यक्रम और मूल्यांकन संबंधी सुधार, शिक्षण व्यवस्था से संबंधित सुधार ऐसे अनेकों विषयों का विचार किया गया है। इसी विषयों के चिन्तन मनन में संस्कृत भाषा का तथा भारतीय ज्ञान का भी परिपूर्ण विचार किया गया है।

३. राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० तथा संस्कृत ज्ञान प्रणाली (SKS)

३.१.विद्यालयीन स्तर–

भारत की शास्त्रीय भाषाओं और साहित्य के महता, उपयोगिता, सुंदरता आदि को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। सम्भवतः भारतीय भाषा के जननी के रूप में संस्कृत भाषा को स्वीकार किया गया है तथा उसके कई कारण भी हमें ज्ञात है। संस्कृत साहित्य में गणितशास्त्र, दर्शनशास्त्र, व्याकरणशास्त्र, संगीतशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, चिकित्सा, वास्तुकला, धातुविज्ञान, नाटक, काव्यशास्त्र, कथा और बहुत कुछ विद्यमान है। इस वाङ्मय के निर्माण में हजारों वर्षों की परंपरा है। इस प्रकार की संविधान की आठवीं अनुसूची में वर्णित एक महत्त्वपूर्ण संस्कृत भाषा को त्रि–भाषा के मुख्यधारा में विकल्प के रूप में रखा गया है । इसे फाउंडेशनल और मिडिल स्कूल स्तर पर संस्कृत के माध्यम से संस्कृत पढाने के प्रयास का भी प्रावधान

है।

देश के बच्चों के संवर्धन के लिए और इन समृद्ध भाषाओं और उनके कलात्मकता के संरक्षण के लिए सभी विद्यालयों में इससे संबंधित साहित्य को कम से कम दो साल पढाया जाएगा। मिडिल से सेकेंडरी स्तर तक और यहाँ तक कि इसके आगे भी इनका अध्ययन करते रहने का विकल्प छात्रों के पास होगा।

Sr.No	Name of Levels	Level Completion Time
१.	Foundational Stage	Five Years (2nd)
२.	Preparatory Stage	Three Years(5th)
३.	Middle Stage	Three Years(8th)
४.	Secondary Stage	Four Years(12th)

३.२.महाविद्यालयीन स्तर–

डिग्री अथवा स्नातक प्रोग्राम में समय, विषय चयन प्रक्रिया तथा क्रेडिट आदि का परिवर्तन किया है। स्नातक प्रोग्राम तक एकूण १४० के आस पास की क्रेडिट का प्रावधान किया गया है । छात्रों को इसे प्राप्त करने के लिए भिन्न भिन्न स्तर पर अध्ययन करना होगा जिसमें १ वर्ष पूर्ण करने पर सर्टिफिकेट, २ वर्ष पूर्ण करने पर डिप्लोमा तथा ३ वर्ष पूर्ण करने पर स्नातक अर्थात्? डिग्री प्राप्त होगी यदि छात्र ४ वर्ष पूर्ण कर लेता है तो स्नातक प्रोग्राम की पदवी प्राप्त करेगा। इसमें बहु–विषयक शिक्षा को बढावा देने के कारण छात्रों के क्रेडिट को दो भागों में विभाजितकर सकते है। १) मेजर २) माइनर अर्थात्? छात्र के मुख्य विषय अर्थात्? मेजर को जितना मूल्यांकन है उसी प्रकार का मूल्यांकन अन्य माइनर अर्थात्? ऐच्छिक विषयों को है। छात्रों को मुख्य विषय (मेजर) के साथ–साथ अन्य दो वैकल्पिक विषय (माइनर) लेने की सुविधा है तथा इस सुविधा में संस्कृत ज्ञान प्रणाली की सुविधा हो सकती है। यहाँ पर संस्कृत विषय के साथ अन्य कई विषय होंगे जिसमें विज्ञान, मराठी, हिंदी, सामाजिकशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, वाणिज्यशास्त्र इत्यादी। छात्र मुख्य विषय (मेजर) के रूप में संस्कृत ज्ञान प्रणाली को स्वीकार करेगा।

४. राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० तथा IKS (भारतीय ज्ञान प्रणाली)

इस विषय को समझने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० के

अनुसार IKS (भारतीय ज्ञान प्रणाली) के उद्देश्य क्या है इसको जानना अत्यावश्यक है ऐसा मुझे लगता है। 'भारतीय ज्ञान प्रणाली' में आधुनिक भारत और उसकी सफलताओं और चुनौतियों के प्रति प्राचीन भारत का क्या ज्ञान है और उसका क्या योगदान होगा जिससे शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण आदि के संबंध में भारत की भविष्य स्थिती सुदृढ होगी ।इसमें 'भारतीय ज्ञान प्रणाली' अर्थात्? भारतीय विद्या गणितशास्त्र, खगोलशास्त्र, विज्ञान, दर्शनशास्त्र, वास्तुकला, चिकित्सा, कृषि, इंजीनियरिंग, भाषाविज्ञान, साहित्य, राजव्यवस्था, संरक्षणशास्त्र आदि का समावेश है। प्राचीनकालीन भारत के निर्माण से किसी भी क्षेत्र से संबंधित तथा किसी भी भाषा में विद्यमान भारतीय ज्ञान को भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) कहा है।

४.१.विद्यालयीन स्तर–

भारतीय ज्ञान प्रणाली में विद्यमान जो भी ज्ञान है वह सभी प्रकार का ज्ञान अधिक सरल है ऐसा नहीं है। उस ज्ञान के स्तर के अनुसार उसमें कठिनता निश्चित है इसी कारण राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० में विद्यालयीन स्तर पर IKS को मुख्यरूप से न रखते हुए प्रासंगिक रूप से रखा है। विद्यालयीन पाठ्यक्रम में जहाँ भी प्रासंगिकता हो वहाँ पर IKS का वैज्ञानिक तरीके से और एक सटीक रूप से समावेश किया जाएगा । जैसे हम एक उदाहरण से समझ सकते है–NCRT के ६ में विज्ञानविषय में वायुतत्त्व को लेकर एक पाठ दिया गया है तथा वहाँ पर वायु का सामान्य रूप बताने का प्रयास है कि वायु वह है जिसे आप देख नहीं सकते लेकिन वह स्पर्शानुभव से सिद्ध है। उसमें भिन्न भिन्न Gases होती है इसी के संदर्भ में हम भारतीय ज्ञान प्रणाली के ग्रंथो में विद्यमान तर्कसंग्रहस्थ वायुद्रव्य का विश्लेषण तथा लक्षण दे तो वह IKS का सटीक रूप विद्यालयीन स्तर पर होगा ।इस विषय को समझाने के लिए हमें भारतीय प्राचीन ज्ञान के साथ साथ आधुनिक ज्ञान की सादृश्यता को देखना पडेगा इसका तात्पर्य यह नहीं कि सर्वत्र ही सादृश्यता होगी, अपितु कहीं पर असादृश्यता भी है।

४.२. महाविद्यालयीन स्तर–

महाविद्यालयीन स्तर पर भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) एक विषय के रूप में प्रस्तुत किया जाएगा। विद्यालयीन स्तर पर इसे प्रासंगिक रूप से स्वीकार किया गया परंतु महाविद्यालयीन स्तर पर इससे एक स्वतंत्र रूप में

स्वीकार किया गया है। यहाँ पर छात्रों को लगभग ४ क्रेडिट के लिए अनिवार्यरूप में रहेगा। इस प्रक्रिया में भारतीय विद्याओं का समावेश होगा जो कि किसी भी विषय से संबंधित हो या किसी भी भाषा में विद्यमान हो। इसमें संस्कृत भाषा में विद्यमान ज्ञान प्रणाली का भी समावेश होगा। इसमें अनेकों भाषाओं में अनेकों विषयों से संबंधित पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाएगा तथा छात्र आपने आवश्यकता के अनुसार उसमें से किसी एक विषय को भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) के रूप में सीखेगा।

निष्कर्ष:–

उपर्युक्त विषय के ज्ञान से प्रतीत होता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० के दृष्टि में भारतीय ज्ञान प्रणाली तथा संस्कृत ज्ञान प्रणाली ये दोनों भिन्न भिन्न है। भारतीय ज्ञान प्रणाली में संस्कृत ज्ञान प्रणाली का समावेश होगा परंतु केवल संस्कृत ज्ञान प्रणाली ही भारतीय ज्ञान प्रणाली है यह मानना अथवा कहना उचित नहीं होगा। भारतीय ज्ञान प्रणाली तथा संस्कृत ज्ञान प्रणाली के माध्यम से संस्कृत भाषा को मुख्य प्रवाह में प्रवाहित करने का यह एक बडा अवसर है। IKS को विद्यालयीन स्तर पर अधिक कठिनाई का सामना नहीं करना पडेगा परंतु महाविद्यालयीन स्तर पर निश्चित ही समस्या का सामना करना पडेगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० में भारतीय ज्ञान प्रणाली तथा प्राचीन भारतीय भाषाओं को विशेष स्थान प्रदान करती है। प्राचीन ज्ञान तथा आधुनिक ज्ञान इनके बीच में जो कोई संबंध हीनता स्थापित हुई है, वह नष्ट होकर एक दूसरे को सहायक के रूप में होंगे ऐसा प्रतीत होता है।

संदर्भसूची :–

१. लेखक शासकीय आदर्श विज्ञान महाविद्यालय, रीवा (म. प्र.) भू–विज्ञान विभागाध्यक्ष. https://rashtriyashiksha.com/indian-knowledge-tradition-and-national-education-policy/

२. राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२०– मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार पृ ८१, ९२. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

३. राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२०– मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत

सरकार. ४.१७, पृ २१.
https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
४. राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२०-४.१९, पृ २२.
https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
५. https://www.ugc.gov.in/pdfnews/8023719_Guidelines-for-CBCS.pdf p. no 19
६. राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२०- ११.१०, पृ. ५९.
७. राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२०. २२.१, २२.६, २२.९.
८. राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२०- मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार. ४.२७, पृ २४.
https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
९. राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२०- मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार. पृ २४.
https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
१०. The Invisible mixture of gases (such as nitrogen and oxygen) that surrounds the Earth and that people and animals breathe. (NCRT Book of Science) Chapter No 15, page 147
११. रूपरहितस्पर्शवान्? वायुः। (तर्कसंग्रह, पृ.७)

❐❐❐

२१.
नवीन शैक्षणिक धोरण–२०२० व तंत्रज्ञान संस्था

डॉ. वितेश निकते, लोकप्रशासन विभाग,
राजर्षी शाहू महाविद्यालय (स्वायत्त), लातूर
प्रा. ज्ञानेश्वर बनसोडे, राज्यशास्त्र विभाग,
राजर्षी शाहू महाविद्यालय (स्वायत्त), लातूर

प्रस्तावना :

राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण जाहीर झाल्यामुळे भारतीय शैक्षणिक विकासाच्या इतिहासात एक नवा आयाम प्रस्थापित करण्याचा प्रयत्न सुरू आहे. संपूर्ण देशातील शिक्षणामध्ये असलेल्या विसंगतींमध्ये एकसमानता यावी आणि ही एकसमानता शिक्षणात क्रांती घडवून आणण्यासाठी उपयुक्त ठरेल यासाठी भारत सरकार एक नवीन शिक्षण प्रणाली सुरू करण्याचा प्रयत्न करत आहे. अभ्यासक्रमातील बदल, शिक्षणातील व्यावसायिकीकरण, औद्योगिक आणि तांत्रिक शिक्षणाची व्यवस्था, मुक्त विद्यापीठांद्वारे शिक्षण, दूरस्थ शिक्षण, निरक्षरांसाठी सतत शिक्षणाच्या खुल्या संधी, इंटरनेट, दूरदर्शन आणि दूरसंचार आणि व्हिडिओ असा साधनांद्वारे दुर्गम भागातील लोकांना शिक्षण देण्यासाठी कार्यक्रम शिक्षणाचे आव्हान कमी करण्याचा प्रयत्न यामध्ये करण्यात आला आहे.

या नवीन शिक्षण व्यवस्थेत प्रत्येकाला शिक्षणाची समान संधी देण्याची व्यवस्था आहे जेणेकरून त्याने आपल्या आवडीचे शिक्षण घ्यावे आणि त्याचे पालन करून आपले जीवन विकसित करावे. या सर्वसमावेशक कार्यक्रमात, प्राथमिक शिक्षणापासून ते उच्च शिक्षणापर्यंत आणि निरंतर शिक्षणापर्यंत, त्या सर्व शैक्षणिक सुविधांची व्यवस्था करण्यात आली आहे, ज्यात ब्लॅक बोर्ड अपरेशनपासून ते घरोघरी टीव्ही, संगणक, इंटरनेट, यूटयूब, सोशल मिडिया, आणि इतर अभ्यास साहित्य पोहोचवण्यापर्यंतचा समावेश आहे. पुस्तके व नियतकालिके यांच्या अभ्यासाची थेट सोय किंवा